शोध मंथन Vol. XII No.IV Oct.-Dec. 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.354 (SJIF)

उत्तराखण्ड़ राज्य में पलायन के कारण

डॉ० विनय चंद्र
असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
एम०बी० राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
हल्द्वानी, नैनीताल
ईमेलः *vjntl123@gmail.com*

प्राप्तिः 20.10.2021
स्वीकृतः 26.12.2021

पुष्पा पोखरिया
शोध छात्रा, वाणिज्य विभाग
एम०बी० राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
हल्द्वानी, नैनीताल
ईमेलः *poojapokhariya95@gmail.com*

सारांश

पलायन अपने निवास स्थान को छोड़कर किसी नये स्थान में चले जाने की प्रकिया को पलायन कहते हैं। आज भी अधिकतर लोग ग्रामीण क्षेत्रों में ही निवास करते हैं लेकिन अब यह एक गहन चिन्तन का विषय है कि ग्रामीण क्षेत्र अब धीरे–धीरे खाली होने के कगार में है कई ऐसे ग्रामीण क्षेत्र जहां भूमि बंजर, घर खंड़र बनकर रह गए है ऐसी स्थिति चिंता का विषय तो पैदा करती ही है साथ ही शहरों के लिए भी यह हालात अच्छे नहीं है ग्रामीण जंनसंख्या के कारण शहर में भी आबादी का घनत्व दिन ब दिन बढ़ता जा रहा है। यह अध्ययन का मुख्य उददेश्य उत्तराखण्ड़ राज्य में पलायन के कारणों को दर्शाना है। तथा अध्ययन के उददेश्यों को पूरा करने के लिए प्रश्नावली के माध्यम सेउत्तराखण्ड़ राज्य के समस्त 13 जिलों से पलायन कर चुके 400 लोगों से प्रतिदर्श संकलित किए गए हैं। और अध्ययन को तैयार करने के लिए विभिन्न सॉफटवेयर व उपकरणों का प्रयोग किया गया है तथा निष्कर्ष में प्राप्त हुआ की राज्य में सबसे अधिक पलायन रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क व अन्य सुविधाएं कृषि के अलावा गांव में रोजगार के अन्य साधन मौजूद न होना, वन्य जीवों का खेती पर प्रभाव, गांव में समान मिलने में अभाव यह सभी कारण पलायन करने के लिए लोगों को विवश करते है। और साथ ही कुछ लोग यह भी मानते हैं कि वह गांव को छोड़कर शहरी क्षेत्र में जीवन बिताना चाहते हैं।

प्रस्तावना

पलायन एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान पर जाकर रहने की प्रकिया है। सामान्य शब्दों में पलायन का तात्पर्य वह स्थान से है जहां जन्म होता है और उसके उपरान्त वह उस जगह को छोड़कर अन्य स्थान में रहने चले जाता है। उसके लिए वह स्थान बिल्कुल नया होता है वह उस स्थान से अपरिचित तथा भिन्न होता है।

गांव से शहरों की ओर पलायन का सिलसिला नया नहीं है। औधोगिक सुविधाओं की कमी के चलते रोजी रोटी की तलाश में लोग गांव से शहरों की ओर मुह मोड़ रहे हैं। गांधी जी ने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान में रहने की सलाह दी थी। मुंशी प्रेमचन्द्र ने भी अपने उपन्यास गोदान में गांव छोड़कर शहर जाने की समस्या को उठाया था।

पलायन कोई पंरम्परा या कोई धारणा नहीं जो लोग उसे निभाने के लिए करते है यह गांव में भौतिक सुख सुविधाओं के अभाव के कारण उसकी तलाश में शहर की तरफ पलायन कर रहे हैं।

इक्कीसवी सदी में भी पलायन एक चुनौती बनता जारा है। इसका कारण है कि अभी भी विभिन्न राज्यों या क्षेत्रों में विकास पूर्ण रुप से सफल नही हुआ है। भारत के ग्रामीण इलाकों में संसाधनों का अभाव है। न सड़क है न पानी की सुविधा है न बिजली और न ही आवागमन के बेहतर साधन है। देश को आजाद हुए 70 वर्ष से अधिक हो गये है। लेकिन देश में भूखमरी, अशिक्षा अभी भी कायम बनी हुई है। वह मजदूर जो भूमिहीन या जिनके पास कषषि करने जितनी योग्य भूमि नही है और अशिक्षित है वह शहरों में काम की तलाश में आते है इसलिए शहरों की जनसंख्या करोड़ो में है तथा इस जनसंख्यां के दबाव के कारण शहरो में अपराध, अनैतिकता, भ्रष्टाचार आदि में दिनप्रतिदिन वृद्वि होते जा रही है।

पलायन एक बड़ी चुनौति है, जो हमारे देश के पढ़े–लिखे युवक उनको आर्थिक रुप से विकसित देश, अनेक तरह का प्रलोभन देकर अपने यहां बुला लेते हैं। तथा लाखों रुपयों का वेतन साथ ही अनेक सुविधाएं देकर प्रतिभासम्पन्न युवकों को अपने देश बसा लेते हैं जिसका यह परिणाम निकलता है कि योग्य युवक पलायन कर जाते हैं। तथा देश के निर्माण में जिनका सबसे अधिक योगदान होना चाहिए वह दूसरे देश में अपनी प्रतिभा का लाभ देते है। तथा देश में बचता है तो भ्रष्ट तंत्र, में नौकरियां, सिफारिश, भाई– भतीजावाद आदि तथा योग्य युवकों को देश में रोजगार प्राप्त भी हो जाए तो बहुत कम वेतन प्राप्त होता है। जिससे वह दूसरे देश जाना ही उचित समझते हैं।

पलायन की चुनौतियों को कम करने के लिए सबसे प्रथम हमको अंसतुलित विकास को संतुलित विकास की ओर लाना होगा जो मजदूर निर्धन, अशिक्षित, बेरोजगार हैं जो शहर में काम की तलाश में जाते है उनके लिए गांव में ही अच्छे संसाधन व रोजगार, शिक्षा और उनके आवास को सबल बनाना होगा। तथा ग्रामीण क्षेत्रों में ही सभी मौलिक सुविधाएं प्रदान करनी होगी। आज देश के हालत बदल रहे हैं। सरकारी नौकरियां कम हो रही हैं उनकी जगह, स्वदेशी व विदेशी नौकरियों ने ले ली है। तथा विदेशी कम्पनी देश में अपना दबदबा बना रही है जिससे देश का धन विदेशों में जा रहा है। इसका तात्पर्य यह है कि देश आर्थिक रुप से सक्षम की जगह दुर्बल हो रहा है। तथा साथ ही प्रतिभा पूर्ण योग्य युवको को भी देश में ही अच्छे रोजगार की सुविधाएं देनी होगी जिससे देश में संतुलित विकास बना रहेगा।

उत्तराखण्ड़ राज्य के पहाड़ी क्षेत्रों से पलायन एक बड़ा व विकराल समस्या का रुप धारण कर चुका है। उस समस्या से निपटने के लिए यदि जल्द से जल्द कोई निवारण नहीं किया गया तो राज्य की संस्कृति व परंपराओं पर भी खतरा मंडरा रहा है। हर राज्य की व हर गांव की अपनी संस्कृति व पहचान होती है। जो एक स्थान से दूसरे स्थान जाने से खो जाती है। उत्तराखण्ड़ राज्य की संस्कृति व पहचान पूरे भारत में एक अलग पहचान रखती है। परन्तु अगर राज्य में इसी तरह पलायन होता रहा तो एक दिन यह संस्कृति कहीं खो जायेगी। उत्तराखण्ड़ राज्य में राज्य सरकार व केंद्र सरकार समय–समय पर पलायन को रोकने के लिए कोई ठोस नीतियां बनाती रहती है। परन्तु अभी तक पलायन को रोकने के लिए कोई ठोस नीति नहीं बन पायी है राज्य में पलायन का मुददा अब एक राजनैतिक मुददा न रह कर यह एक सामाजिक मानवाधिकार और अपनी संस्कृति के खो जाने के संकट से जुड़ा हुआ मुददा बन गया है। राज्य में पलायन से जुड़े मुददे अनेक हैं। परन्तु राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, चिकित्सा और रोजगार का न होना यह पलायन के मुख्य कारण हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में गांव में स्कूल व चिकित्सा सुविधाएं हैं भी तो वहां ड़ॉक्टरव अध्यापक नहीं है। रोजगार के

लिए अनेक सुविधाएं है परन्तु कियावंयन के लिए अच्छी नीति नहीं है। राज्य की यह स्थिति पलायन के लिए लोगों को विवश करती है।

साहित्य की समीक्षा

Yadav amita, sharma Gyanendra or gangwar renu (2018). इस पेपर का उददेश्य प्रवास के प्रेरक कारकों के बारे में महिलाओं की धारणा का पता लगााना है। प्रस्तुत शोध में कुल 220 उतरदाताओं का अध्ययन किया गया। परिणाम से यह स्पष्ट था कि उतरदाताओं ने माना कि रोजगार के अवसरों की कमी प्रमुख धक्का निर्धारक के रुप में थी। यह भी पाया गया कि उतरदाताओं ने सहमति व्यक्त की अन्य धक्का निर्धारण जैसे बुनियादी जरुरतों को पूरा करने में असमर्थता, घरेलू खर्च में वृद्वि, शैक्षिक खर्चों को पूरा करने में असमर्थता और चिकित्सा खर्च ग्रामीण जगह छोड़ने के अन्य मुख्य कारण थे।

Yadav amita, sharma Gyanendra (2016). ग्रामीण क्षेत्रों को बढ़ाने के लिए कुछ और ग्रामीण केन्द्रित योजनाओं को विकसित करने की आवश्यकता है। जनशक्ति और सुविधाओं के मामले में बुनियादि ढ़ाचा ताकि ग्राम के महात्मा गांधी का सपना स्वराज का एहसास देश के हर गांव में होता है। ग्रामीण से शहरी प्रवास एक प्रतीत होता है ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण कारक लगभग सभी प्रवासी ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में आर्थिक या सामाजिक या दोनों तरह से योगदान करते है। प्रवासी परिवारों का आर्थिक स्थिति मोटे तौर पर गांव के उन परिवारों से बेहतर है जहां से कोई प्रवास नही हुआ है।

Chakraborty anannya, acharya sk (2018). वर्तमान अध्ययन में सुझाव दिया गया है। जो किसान युवा है उनके पास औपचारिक शिक्षा और मीड़िया के संपर्क में अधिक आनंद ले रहे हैं। बहुत आधुनिकता के लिए शहरी क्षेत्रों में प्रवास करने के लिए बहुत उत्सुक सुविधाएं और उच्च जीवन स्तर, ग्रामीण की यह मानसिकता युवाओं को एक खतरनाक स्थिति के रुप में माना जा सकता है। क्योंकि यदि नई पीढ़ी खेती से कतरा रही है तो बड़ी मुश्किल होगी भारत की इस 1 32 अरब आबादी को खिलाने के लिए ग्रामीण पर लगाम लगाने के लिए खेतों में युवाओं को सरकार को एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

Chetia jyotikona (2014). उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि युवाओं के इस पलायन को रोकने की तत्काल आवश्यकता है। प्रवास को रोकने के लिए बाढ़ के प्रति लोगों की संवेदनशीलता को कम करने के लिए विशेष उपाय किये जाने चाहिए। क्योंकि बाढ़ धेमाजी जिले में युवाओं के प्रवास के महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। बुनाई जैसे लघु उधोग स्थापित कर रोजगार के अधिक अवसर सृजित किए जा सकते हैं। महिलाओं को अपने परिवार की आर्थिक मदद करने के लिए स्वयं की आर्थिक मदद करने के लिए स्वयं सहायता समूह बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। मनरेगा की मजदूरी दर में वृद्वि करने की आवश्यकता है।

उददेश्य

इस अध्ययन का मुख्य उददेश्य उतराखण्ड़ राज्य में पलायन के कारणों का अध्ययन करना है।

अनुसंधान किया विधि

इस शोध पत्र में वर्णनात्मक तथा संख्यात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के उददे्श्यों को पूरा करने के लिए प्राथमिक आकड़ो का प्रयोग किया गया है। तथा प्राथमिक आकड़े

राज्य के सभी जिलों से पलायन कर चुके लोगों से एकत्रित किये गए हैं तथा एकत्रित आकड़ों का विश्लेषण करके परिणाम ज्ञात किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

इस अध्ययन में समस्त उत्तराखण्ड़ राज्य के कुमाऊं व गढ़वाल मण्ड़ल के समस्त 13 जिलों को सम्मिलित किया गया है। जिसमें से कुमाऊं मण्ड़ल से 6 जिले नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथैरागढ़, उधम सिंह नगर, बागेश्वर व चम्पावत हैं तथा गढ़वाल मण्ड़ल से 7 जिले चमोली, उत्तरकाशी, देहरादून, पौढ़ी गढ़वाल, टिहरी गढ़वाल, हरिद्वार व रुद्रप्रयाग जिला लिए गए हैं। तथा प्रतिदर्श प्रश्नावली के द्वारा उतराखण्ड़ राज्य के समस्त 13 जिलों से पलायन कर चुके 400 लोगों से संकलित किए गए है।

उपकरण

यह अध्ययन में विभिन्न सॉफ्टवेयर का प्रयोग करके तैयार किया गया है तथा इस अध्ययन को करने में M.S WORD, M.S EXCEL, GOOGLE, TRANSLATOR व इत्यादि का प्रयोग किया गया है। तथा इस अध्ययन में विभिन्न सांख्यिकीय उपकरणों का भी प्रयोग किया गया है जिसमें प्रतिशत, औसत, व इत्यादि सांख्यिकीय उपकरण सम्मिलित किये गये हैं।

उत्तराखण्ड़ राज्य से पलायन करने का कारण

विवरण	औसत	प्रतिशत
गांव में माध्यमिक शिक्षा के साधनों एवं आधुनिक शिक्षा संस्थानों की कमी के कारण बच्चों की शिक्षा हेतु पलायन	2.55	85.08%
गांव में उच्च शिक्षा के अभाव के कारण पलायन	2.59	86.42%
गांव से पलायन करने का कारण गांव में कृषि भूमि पर कार्य करना कठिन हो गया था	2.00	66.50%
गांव से पलायन का कारण स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव	2.52	83.83%
गांव से पलायन का कारण रोजगार सुविधाओं हेतु	2.75	91.50%
गांव से पलायन करने का कारण शहरी क्षेत्र में जीवन बिताने हेतु	1.88	62.67%
गांव से पलायन करने का कारण गांव में आपके पास जो कृषि हैउस कृषि से जीवन निर्वाह करना कठिन हो गया था	2.08	69.42%
गांव से पलायन करने का कारण सड़क सुविधाओं के अभाव है	2.40	80.00%
गांव से पलायन का कारण सामान्य खरीद का सामान मिलने में भी अभाव रहता था	2.30	76.58%
गांव से पलायन का कारण गांव में कम ही लोग बचे थे और धीरे–धीरे गांव खाली होते जा रहा था	2.03	67.67%
गांव से पलायन का कारण वन्यजीवों का खेती पर प्रभाव	2.22	73.83%
गांव से पलायन का कारण गांव में कृषि के अलावा रोजगार का कोई अन्य साधन मौजूद नहीं था	2.65	88.42%
औसत	2.33	88.42%

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि पलायन करने के अनेक कारण हैं परन्तु सबसे मुख्य कारण ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सुविधाओं का अभाव है जिसके कारण युवा से लेकर बुड़े लोग भी पलायन करने को मजबूर हैं। तथा पलायन कर रहें हैं। परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क इत्यादि सुविधाओं का अभाव होने के कारण लोग गांव से शहर की ओर रुख ले रहें है। उपरोक्त तालिका के माध्यम से ज्ञात होता है सर्वाधिक पलायन 91.50 प्रतिशत, 86.42 प्रतिशत रोजगार व माध यमिक व उच्च शिक्षा के अभाव के कारण हुआ है साथ ही साथ गांव में केवल कृषि आधारित रोजगार वन्य जीवों का अधिक प्रभाव सड़क सुविधओं का अभाव भी पलायन करने के कारण है। पलायन राज्य के लिए एक समस्या ही नहीं यह राज्य लिए खतरा है राज्य के कई ऐसे क्षेत्रों में सड़क सुविधाएं नहीं है और ना ही राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में अच्छे स्वास्थ्य सुविधाओं की सुविधा है एक कृषि के साधन ग्रामीण के लिए उपलब्ध होते हैं वो भी जंगली जीव नष्ट कर देते हैं यह सबसे परेशान होकर लोग शहर की ओर दिनों दिन अग्रसर हो रहें हैं।

निष्कर्ष

इस अध्ययन का मुख्य उददेश्य उत्तराखण्ड़ राज्य में पलायन के कारणों को दर्शाना है। तथा उददे्श्यों को पूरा करने के लिए प्रतिदर्शो का एकत्रीकरण प्रश्नावली के द्वारा उत्तराखण्ड़ राज्य के समस्त 13 जिलों से पलायन कर चुके 400 लोगों से संकलित किए गए हैं। तथा अध्ययन को पूर्ण करने के लिएविभिन्न सॉफटवेयर व उपकारणो को मिलाकर तैयार किया गया है। तथा सभी जिलों से एकत्र किए गए प्रतिदर्शों के माध्यम से निष्कर्ष ज्ञात किया गया है उत्तराखण्ड़ राज्य के पहाड़ी क्षेत्रों और ग्रामीण में मौजूदा स्थिति गंभीर होते जा रहे है क्योंकि राज्य के अधिकतर गांव भूतिया गांव में तब्दील हो गए हैं और इनकी संख्यां दिनो दिन बढ़ती जा रही है। अधिकतर पलायनराज्य के पहाड़ी क्षेत्रों से ग्रामीण रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क इत्यादि के अभाव में राज्य के भीतर या राज्य के बाहर पलायन कर रहें हैं। सर्वाधिक पलायन 91.50 प्रतिशत, 86.42 प्रतिशत रोजगार व माध्यमिक व उच्च शिक्षा के अभाव के कारण हुआ है साथ ही साथ गांव में केवल कृषि आधारित रोजगार वन्य जीवों का अधिक प्रभाव सड़क सुविधओं का अभाव भी पलायन करने के कारण है। पलायन राज्य के लिए एक समस्या ही नहीं यह राज्य लिए खतरा है राज्य के कई ऐसे क्षेत्रों में सड़क सुविधाएं नहीं है और ना ही राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में अच्छे स्वास्थ्य सुविधाओं की सुविधा है एक कृषि के साधन ग्रामीण के लिए उपलब्ध होते हैं वो भी जंगली जीव नष्ट कर देते हैं यह सबसे परेशान होकर लोग शहर की ओर दिनों दिन अग्रसर हो रहें हैं। उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है। पलायन करने के प्रमुख कारणों में भौगोलिक व सामाजिक कारकों की तुलना में आर्थिक कारण भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है परन्तु पलायन एक वास्तविक मानव आचरण है जो प्राचीन काल से ही होता आ रहा है। परन्तु यह एक गहन चिन्तन का विषय है जैसा कि अभिलिखित तालिका से ज्ञात होता है कि अधिकतर लोग मौलिक सुविधाओं के अभाव में पलायन कर रहें हैं।

सुझाव

अध्ययन के निष्कर्षों के अनुसार उत्तराखण्ड़ राज्य में उत्तराखण्ड़ राज्य के लोग रोजगार, माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा व सड़क जैसी मूलभूत संविधाओं के अभाव में पलायन कर रहें हैं। तथा केन्द्र व राज्य सरकार को रोजगार, शिक्षा व सड़क सुविधा पर तत्काल प्रभाव से अत्यधिक ध्यान देने की आवश्यकता है तथा उत्तराखण्ड़ राज्य में रोजगार औधोगिकरण बढ़ाने वाली शिक्षा देने की

आवश्यकता है जिससे सम्पूर्ण व प्रत्येक क्षेत्र की आवश्यकता है जिससे सम्पूर्ण व प्रत्येक क्षेत्र का स्वतः ही विकास सम्भव हैं।

सन्दर्भ

1. Yadav amita, sharma Gyanendra or gangwar renu (2018) determining factors for migration in uttrakhand, international journal of agricultural science and research vol.8, issue 1, fab pp 85-90
2. Yadav amita, sharma Gyanendra (2016). Male out-migration in uttrakhand- a review, international journal of research in social sciences, vol.6 December pp 186-198
3. Chakraborty anannya, acharya sk (2018). Migration and monsoon: the impact of deviated rainfall on rural migration, acta scientific agriculture,vol 2 December pp 1-8
4. Chetia jyotikona (2014). Migration and employment in india: A study in dhemaji district of assam, internatonal journal of current research, vol.6 pp. 4781- 4783